प्रातः क्लास 21/10/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

रूहानी बाप बच्चों का अटेन्शन खैंचवाते हैं। यह रूहानी पाठशाला है। वह जो स्कूल है वह होते हैं मनुष्यों की। जिसमें मनुष्य मनुष्य को देखते हैं। कोई बैरीस्टर है, डाक्टर है, कहेंगे हम बैरीस्टरी पढ़ते हैं। मनुष्य का योग मुनष्य से ही है। यहाँ तुम समझते हो हम आत्माएँ बैठे हैं। आत्मा को परमपिता परमात्मा बाप से योग लगाना है। अर्थात् बाप को याद करना है। इसमें ही मेहनत है। सामने ब्रह्मा बैठा है; परन्तु याद करना है शिवबाबा को। शिवबाबा खुद कहते हैं मुझे प्रकृति का आधार लेना पड़ता है। तुम भी आधार लेते हो ना पार्ट बजाने। तो यह है पाठशाला। कौन पढ़ाते हैं? बेहद का बाप। बाप एक ही बार आकर इस रथ द्वारा पढ़ाते हैं। कहते हैं मीठे2 रूहानी बच्चों मैं निराकार हूँ। मुझे सभी याद करते हैं क्योंकि मैं सभी आत्माओं का परमपिता हूँ। लौकिक बाप को परमपिता नहीं कहेंगे। सभी आत्माएँ एक बाप के बच्चे हैं। वह है ऊँच ते ऊँच भगवान। जैसे कॉलेज में स्टुडेन्ट्स पढ़ते हैं तो बुद्धि टीचर तरफ रहती है। हम पढ़कर के यह बनेंगे। बैरीस्टर बनेंगे। यहाँ तुम समझते हो मैं आत्मा हूँ, बाबा आया हुआ है इस भाग्यशाली रथ में। वह नालेजफुल है। मनुष्य सृष्टि का बीजरूप है। चैतन्य है। इस झाड़ के सारी आदि, मध्य, अन्त का उनको मालूम है। झाड़ कहो या सृष्टि चक्र कहो। यह बुद्धि में अच्छी रीत याद रखो हम अभी बाबा से पढ़ रहे हैं। शिवबाबा इस रथ द्वारा हमको पढ़ा रहे हैं। शिवबाबा है ही कल्याणकारी। आते भी हैं कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग पर। सभी मनुष्यों का कल्याण होता है। बाप है ऊँच ते ऊँच। वह इसमें बैठे हैं। इन द्वारा यह पढ़ाई पढ़ा रहे हैं। यह पढ़ाई पढ़कर तुम बच्चे भी ऊँच ते ऊँच बनते हो। बाप आया ही है तुम बच्चों को नर से ना0 बनाने। एमआबजेक्ट ही यह है। मनुष्य से देवता बनना। तुमको देवता नहीं पढ़ाते हैं। बाप पढ़ाते हैं। उनको ही नालेजफुल कहा जाता है। रचयिता और सारी रचना के आदि, मध्य, अन्त की नालेज वह देते हैं। बाप कहते हैं मैं बीजरूप, वृक्षपति हूँ। बृहस्पत दिन भी शुभ समझते हैं। बृहस्पत की दशा अच्छी होती है। तुम बच्चों पर राहू की दशा थी। अभी बदलकर बृहस्पत की दशा बैठी है। भारत ही राहू की दशा में है। फिर अभी बृहस्पत की दशा बैठनी है। कुछ भी न समझो तो नोट करो। यह बात बाबा से पूछेंगे। अभी तुम बच्चों का अटेन्शन सारा है पढ़ाई पर। जैसे स्कूल में बच्चों का अटेन्शन एक तो टीचर तरफ रहता है दूसरा एमआबजेक्ट तरफ। अभी तुम बच्चों को बाप पढ़ा रहे हैं। सृष्टि का चक्र भी समझाते हैं। भक्तिमार्ग में तुम उल्टा समझते2 बिल्कुल ही उल्टी बन गये हैं। अभी बाप बैठ समझाते हैं मीठे2 बच्चे तुम तो विश्व के मालिक थे। तुम देवताओं को पूजने वाले हो ना। तुम देवी देवता धर्म के भी हो, शिवबाबा के बच्चे भी हो। भारतवासी शिव को भी पूजते हैं। फिर देवताओं को भी पूजते हैं; परन्तु वह जानते कुछ भी नहीं हैं। तुमको अभी पता पड़ा है हम शिवबाबा के बच्चे हैं, देवता बनने लिए पढ़ रहे हैं। शिववंशी भी हैं फिर देवी देवता धर्म के भी हैं। अभी देवी देवताओं को तुम पूजते हो फिर तुम्हीं देवी देवता बनेंगे। अभी हो शिववंशी। फिर विष्णुपुरी में जावेंगे। शिववंशी तो सभी हैं; परन्तु वह बिचारे शिव को जानते ही नहीं है। यह समझते हैं कि वह सुप्रीम गॉड फादर है। फिर टीचर भी यह नहीं जानते। वह लिबरेटर, प्रीसेप्टर भी है। यह जानते हैं पर कब आकर लिबरेट करते हैं यह कोई भी नहीं जानते। तुम समझते हो बाप पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही आते हैं। सभी को लिबरेट कर ले जाते हैं। कल्याणकारी युग में आते हैं। जब कि सभी का कल्याण होता है। जैसे बाप कल्याणकारी है वैसे तुम बच्चे भी कल्याणकारी हो। इस समय तुम सभी कल्याण करते हो। तुम हो ईश्वरी मिशन। श्रीमत पर चल रहे हो। बाप कहते हैं मन्मनाभव। मुझे याद करो और सृष्टि चक्र को याद करो। राजाई को याद करो। तुम बच्चों को भी फिर यही संदेश सभी को देना है। कहते हैं बाबा सभी को कैसे देंगे? मुख से तो दे न सकेंगे। नहीं बच्चे। अखबारों द्वारा सभी को आवाज़ पहुँचेगा। अखबारों द्वारा ही तो इतना हंगामा हुआ है ना कि यह जादू करते हैं, भाई–बहन बनाते हैं। अभी एक एक को कैसे बैठ समझावे। इसमें तो बहुत समय लग जावेगा। वह हो जाता है चिट्टी मार्ग। अभी तुमको सर्विस करनी है हिंग मार्ग की। यह तुम्हारे चित्र भी बड़े2 अखबारों में जाने से बहुतों

को मालूम पड़ेगा। मुक्ति–जीवनमुक्ति गॉड फादरली वर्थ राइट। यह तो किसको भी समझाना तो बहुत सहज है ना। फादर2 सभी कहते रहते हैं; परन्तु समझते कुछ भी नहीं हैं। फादर को याद करते हैं तो जरूर फादर को आना पड़े। बाप जानते हैं भक्तिमार्ग में सभी रावण के जेल में अर्थात् पराई राज्य में हैं। मुझे भी पराई राज्य में बुलाते हैं। ओ दूर देश के रहने वाले आओ देश पराये। यह रावण का पराया देश है ना। यह ज्ञान की बातें हैं। बापू गांधी जी भी गाते थे पतित–पावन.....यह उनको पता नहीं था कि पतित किसको, पावन किसको कहा जाता है। पतित को पावन बनाने वाला कौन है। हाथ में तो गीता उठाते थे। और कहते थे पतित–पावन सीता–राम। सभी सीताएँ ब्राइड्स को आकर पावन बनाओ। फिर पिछाड़ी में कह देते थे रधुपति राधव राजा राम। वह तो फिर त्रेता का हो गया ना। श्रीकृष्ण के लिए कहे वह तो फिर भी सतयुग का मालिक है। वह तो त्रेता का हो जाता। दो कला कम हो जाते हैं। तो उनका थोड़े ही नाम लेना चाहिए। वह तो सेकण्ड ग्रेड में है। अभी बाप तुम बच्चों को समझाते हैं तुम युद्ध के मैदान में हो। जो माया से हार खाते हैं उनको क्षत्री कहा जाता है। तुम हो रूहानी क्षत्री। इनकॉगनिटो। अन्डरग्राउन्ड(गुप्त) सच्ची तुम हो। किसको भी पता नहीं है तुम बाप से कैसे राज्य लेते हो। तुम ही अननोन वारियर्स हो। और फिर वेरी वेल नोन। तुम बहुत पूजे जाते हो। देवियों को देखो कितनी पूजा होती है। अभी तुम हो संगमयुग पर। तो यह नालेज धारण करनी चाहिए। नई दुनिया के लिए पुरुषार्थ करना है। यह है पुरानी दुनिया। यहाँ तो अथाह दुख है। बाबा ने कहा था अपार दुखों की लिस्ट बनाओ। लिस्ट निकाली थी; परन्तु अभी छपाया नहीं है। इनको कहा ही जाता है दुखधाम। अपरंअपार दुख है। नई दुनिया में है अपरंअपार सुख। उनको हेविन, स्वर्ग कहा जाता है। यह है नर्क। हेल। अभी तुमको पता पड़ा है गोल्डेन एज से हम आयरन एज में कैसे जाते हैं। सभी आत्माएँ ऊपर से यहाँ आती हैं पार्ट बजाने। बाबा ने समझाया है तुम आत्माएँ रूहानी भाई2 हो। वह है जिस्मानी भाई–भाई। भाई(आत्मा) ही पार्ट बजाती है जिस्म के साथ। तो तुम बच्चों को रूहानी बाप बैठ समझाते हैं। यह देहधारी भी तुम्हारा भाई है। ऊँच ते ऊँच एक भगवान ही है। फिर सूक्ष्मवतन में हैं ब्रह्मा, विष्णु, शंकर। बाप ने समझाया है यह सा0 के लिए हैं। शंकर तो है नहीं। यह भी समझाया है ब्रह्मा है अव्यक्त। जिसका बच्चियाँ सा0 करती हैं। तुम भी ऐसे फरिश्ते बनेंगे। वहाँ हड्डी मास नहीं रहता। यह तो हड्डी मास वाला है ना। इनको भी भूल जाना है। अपन को आत्मा समझ बाप को और घर को याद करना है। पाठशाला में तुमको पढ़ाया जाता है कि तुम फिर से सो देवता बनो। अनेकबार तुम ही बने थे। फिर बनना है। यह बड़ा ही वन्डर है। दुनिया इन बातों को कुछ भी नहीं जानती। उन्हों को कहा ही जाता है तुच्छ बुद्धि। सतयुग में तो तुच्छ बुद्धि जा नहीं सकते हैं। बिल्कुल छी छी बुद्धि हैं। बाप कहते हैं तुम सतयुग में चलने लायक नहीं हो। बहुत ही छी2 पतित हो। यह है विषियस वर्ल्ड। वायसलेस वर्ल्ड थी। अभी विषियस है। 5 विकार सब में हैं। वहाँ तो 5 विकार होते ही नहीं। अभी बाप समझाते हैं तुमको निर्विकारी जरूर बनना है। अभी सभी को वापिस जरूर जाना है। अभी यह है कयामत का समय। हिसाब–किताब चुक्तू कर सभी को सतोप्रधान बनना ही है। आत्मा को ही बनना है। यह भी जानते हो आत्मा अविनाशी है। उसमें पार्ट भी अविनाशी भरा हुआ है। जन्म व जन्म जो पार्ट बजाते हैं वह अविनाशी है। फिर कल्प बाद भी वही पार्ट बजावेंगे। वही तन धारण करेंगे। 84 जन्म, 84 शरीर, 84 नाम जो लिये हैं वही फिर रिपीट होगा। यह ड्रामा अनादि रिपीट होता रहता है। यह भी तुम बच्चे जानते हो। अभी बाप समझाते हैं बच्चे अभी इस देह को भी छोड़ना है। सिन्धी में कहते हैं छड तो छूटे। अर्थात् चले जावेंगे अपने मुक्तिधाम। बन्दर भुंगरे मुट्ठी लेते हैं जब तक छोड़ो नहीं तब तक छूट न सके। बाप भी कहते हैं देह सहित देह के सभी सम्बन्ध छोड़ो तो छूटे। नहीं तो बुद्धियोग लटक पड़ेगा। सभी बन्धन छोड़ो। अपन को आत्मा समझो। बाप को याद करो तो तुम्हारी आत्मा सतोप्रधान बन जावेगी। आत्मा ही याद करती है ना। इस पुरुषोत्तम संगमयुग पर ही तुमको नॉलेज मिलती है। फिर 5000 वर्ष बाद रिपीट होगा। यह बातें कोई शास्त्रों में नहीं हैं। बाप पढ़ाकर सद्गति दे जाते हैं। कहते हैं यह नॉलेज फिर 5000

वर्ष देंगे। पुराने ते पुराना इन ल0ना0 का चित्र है। 5000 वर्ष से जास्ती पुरानी कोई चीज़ होती ही नहीं। मनुष्य तो गपोड़ा लगाते रहते हैं कि इतने वर्ष की यह पुरानी चीज है; परन्तु हो नहीं सकता। यह खेल ही है 5000 वर्ष का। पुराने ते पुराना शिव का लिंग ही है; परन्तु उनकी वैल्यु है नहीं। क्योंकि शिवबाबा पत्थर भित्तर में डाल दिया है। देवताओं की चित्रों की वैल्यु देखो कितनी है। दिलवाला मंदिर के एक एक मूर्ति का 50 हजार 20 हजार किमत अमेरिकन लोग दे देवें। बहुतों के पास पुराना सामान रहता है; परन्तु 5000 वर्ष से पुरानी चीज़ कोई हो नहीं सकती है। जिसने जो कहा वह मान लेते हैं। बुद्ध को 2200 वर्ष हुए हैं तो इतनी पुरानी चीज़ बुद्ध की हो कैसे सकती है। तुम हो मीठे2 सिकीलधे बच्चे। 5000 वर्ष के बाद आकर बाप से मिलते हो। प्रेम के आँसू भी आ जाते हैं। इनको तो कब आँसू नहीं आता। यह बहुत बहुत कम रोता, तुम तो अथाह रोने वाले हो। स्त्री जितना रोती है उतना और कोई नहीं। कोई पास जाते हैं तो रोना जरूर आता है। अभी बच्चों को बाप समझाते हैं आधा कल्प के लिए तुमको कब रोना नहीं है। पुरुषार्थ पुरी रीति करना है। विश्व के मालिक बनते हो रोवेंगे कैसे। तुमको पढ़ाने वाला है बाप। ऊँच ते ऊँच बाप के बच्चे रोवेंगे कैसे! रोने से देह अभिमान आ जाते हैं। अभी अजन तुमको पूरी खुशी नहीं रहती है। यह तो गायन है अति इन्द्रिय सुख गोप–गोपियों से पूछो। सो कब? बाप कहते हैं वह तुम्हारी अवस्था पिछाड़ी में होनी है। जब रिजल्ट निकलती है फिर तुम्हारी खुशी बढ़ती जावेगी। तुम जब सतोप्रधान थे तो बहुत ही खुशी में थे। कब अकाले मृत्यु नहीं होती थी। वहाँ दुख का नाम निशान नहीं होता। तो वह रिजल्ट पिछाड़ी में निकलती है। वह अन्दर में खुशी रहती है हम विश्व के मालिक बनने वाले हैं। और कोई होगा ही नहीं। सतयुग में वजीर आदि कोई होते ही नहीं। वजीर तब होते हैं जब पतित बनते हैं। तुमको कोई से भी राय लेने की दरकार ही नहीं। एक ही बार तुमको राय मिलती है। जो आधा कल्प चलती है। सतयुग में वजीर होता ही नहीं। वजीर तब होते हैं जब विकारी बनते हैं। अभी तो तमोप्रधान होने कारण ढेर वजीर हैं। बड़ा वजीर फिर छोटे2 वजीर। दूसरों की मदद चाहिए क्योंकि खुद में इतना अकल नहीं है। इन(ल0ना0) को तो बहुत अकल है। कितनी ताकत रहती है सारे विश्व पर राज्य चलाने की। कोई खिट2 नहीं। फिर जैसे2 ताकत कम होती जाती है तो डरपोक होते जाते हैं। जहाँ–तहाँ ढेर मिनिस्टरस हैं। भूलें भी करते रहते हैं। बाप समझाते हैं रिलीजन इज़ माइट। वहाँ तुम्हारी कितनी माइट रहती है। सतोप्रधान हो ना। जो नये2 आते हैं उनमें भी ताकत रहती है इसलिए उन्हों का प्रभाव निकलता है। अभी तुम तमोप्रधान से सतोप्रधान बन रहे हो। तुम्हारा पार्ट सबसे ऊँच ते ऊँच है। शुरू से लेकर पिछाड़ी तक पार्ट बजाते हो। सभी एक्टर्स हैं। बाबा में बड़ी ताकत है फिर बाबा से ताकत लेते हो। सबसे जास्ती तुम ताकत लेते हो याद की यात्रा से। सारे विश्व के तुम मालिक बनते हो। कब स्वप्न में भी याद न होगा। यह बाप ही बैठ बताते हैं। इसमें मुँझने की बात ही नहीं। तुम निश्चय बुद्धि हो जाते हो तो बाप पर कुर्बान जाते हो। भक्तिमार्ग में तुम गाते थे ना। तुम कितने पुराने आशुक को(हो) एक मुझ माशुक के। कहते आये हो बाबा आप आवेंगे तो हम वारी जावेंगे। कुर्बान जावेंगे। हम आप पर वारी जावेंगे तो आप हमारे पर 21 बार वारी जावेंगे। कब वारी जाते हैं जब विनाश होता है। देह सहित देह के सभी कुछ खलास हो जाना है। इनसे पहले हम एक बार वारी जावेंगे आप 21 बार वारी जाना। तुम बच्चे 21 जन्मों का वरसा लेते हो ना। यह बेहद का फादर ही 21 जन्मों का वरसा देते हैं। वहाँ तो सदैव सुख ही सुख है। दुख में सुमिरण सभी करते हैं। सुख में करे न कोय। क्योंकि 21 बार बाबा .....वया। फिर तुम सुख ही सुख भोगते हो। कब तुमको सुखी बनाकर गये। फिर आये हैं। लाखों वर्ष की तो बात ही नहीं। कल तुमको यह बनाकर गये, फिर तुम 84 जन्म ले यह बने हो। अभी फिर तुम्हारे निमंत्रण पर आये हैं। कहते हैं बाबा पराये देश में आओ। आँसू भी आ जाते हैं। बच्चों ने बहुत दुख देखी है। भक्तिमार्ग में इन बच्चों बहुत दुख देखी है। गरुड़पुराण में भी विषय वैतरणी नदी दिखाते हैं। कहते हैं ना गऊ

पूँछ पकड़ कर पार हो जावेंगे। कई ऐसे समझते हैं अच्छा–2 तुम स्वर्ग में जावेंगे तो हम तुम्हारा पूँछ पकड़ लेंगे; परन्तु ऐसी बात तो है नहीं। अभी तुम बच्चों को कितना अकलमन्द बनाते हैं। बच्चों को बैठ समझाते हैं। जब तक यह रथ है बाबा प्रवेश करते हैं। इम्तहान पूरा होगा तो फिर वह भी चले जावेंगे। यह भी जावेंगे। शास्त्रों में भी है आटे में लून। बाकी सभी है झूठ। गीता भी है; परन्तु झूठ डाल दिया है। यह कोई नहीं जानते हैं परमपिता परमात्मा तीनों धर्म की स्थापना करते हैं। श्रीकृष्ण तो है छोटा बच्चा। वह कैसे बाप बनेगा। बाप तो ऊपर से आते हैं। वह है सभी का बाप। तो अभी तुम इन बातों को समझते हो। इन बातों को अच्छी रीत समझाना भी है। आत्मा ही सभी कुछ करती है। आत्मा ही कर्म करती है ऑरगन्स द्वारा। तो आत्म–अभिमानी बनना चाहिए ना। बाप आकर आत्म–अभिमानी बनाते हैं। सिवाय बाप के और कोई आत्माभिमानी बनाये न सके। आत्मा का ज्ञान भी कोई में नहीं है। कहते हैं आत्मा अगुंष्ट मिसल है। और दूसरे तरफ फिर कहते हैं भृकुटि के बीच चमकता है अजब सितारा। अभी राइट क्या है। तुम तो समझते हो आत्मा बिल्कुल छोटी बिन्दी है। उनको इन आँखों से कोई देख नहीं सकते हैं। समझा जाता है हमारे इस शरीर में आत्मा अविनाशी है। यह शरीर विनाशी है। आत्मा का निवास स्थान परमधाम में है। यहाँ यह बेहद का बड़ा माण्डवा है। जिसमें सभी पार्ट बजाते हैं। कितना बड़ा माण्डवा है। अभी देवताओं का राज्य तो है नहीं। अभी है रावण राज्य। फिर राम–राज्य होता है। जिसको डिटीज्म कहा जाता है। इसमें सूर्यवंशी चन्द्रवंशी दोनों है। सतयुग को कहा जाता है स्वर्ग। त्रेता को कहा जाता है सेमी स्वर्ग। वह सूर्यवंशी वह चन्द्रवंशी। जो माया पर पूरी जीत नहीं पहन सकते। वह चन्द्रवंशी बन जाते हैं। तो बाप समझाते हैं कितना समझाकर कितना समझावें। पिछाड़ी में फिर कहते हैं मन्मनाभव। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। तुम अनुभव भी सुनाते हो बरोबर बाप आकर हमको मनुष्य से देवता बनाते हैं। देवता से मनुष्य, मनुष्य से फिर देवता यह तुम्हारा ही पार्ट है। यह भी खेल है। फिर पिछाड़ी में कहते हैं जास्ती क्या बतावें। बाप को याद करो और राजाई को याद करो। तो अन्त मत सो गति हो जावेगी। बाप ही सद्गति देने की जो मत है वह बाप ही जाने। इसलिए कहते हैं तुमरी गत मत तुम्हीं जानो। अर्थात् सद्गति के मत देना तुम्हीं जानो। तो वह जब आवेंगे तब ही आकर बतावेंगे। फिर 5000 वर्ष बाद आकर मिलेंगे। बच्चे भी कहते हैं बाबा हम 5000वर्ष बाद आप के पास आते हैं। बाप कहते हैं मैं भी ड्रामा अनुसार बांधयमान हूँ। भावी कोई ईश्वर की नहीं। ड्रामा की भावी है। मैं जो राज्य स्थापन करता हूँ। वहाँ अकालेमृत्यु कब होती ही नहीं। यहाँ तो बैठे2 मनुष्य मर जाते हैं। अभी श्रीमत पर तुम अपना राज्य स्थापन कर रहे हो। तुम जानते हो हमारे राज्य में अकाले मृत्यु कब होता ही नहीं। पूरे 150 वर्ष की आयु होती है। पवित्रता है तो पीस प्रॉस्पर्टी भी है। अभी सभी कैरेक्टर्स सुधारने लिए कहते रहते हैं। कैरेक्टर्स पहले2 है ही पावन बनने की। पावन बनने से कैरेक्टर्स भी सुधर जाते हैं। एक सुधरा तो सभी सुधर जाते। एक के बिगड़ने से सभी बिगड़ जाते हैं। अभी पुरुषार्थ कर ऐसा फूल बनना है। लक्ष्मी नारायण को शंख, चक्र, गदा आदि है थोड़े ही; परन्तु ब्राह्मणों को यह शोभेगी नहीं इसलिए विष्णु को दे दिया है। ज्ञान शंख है तुम्हारा। देवताएँ थोड़े ही ज्ञान देते हैं। ब्राह्मणों की माला नहीं होती है। रूद्र माला और रुण्ड माला होती है। शिव है सरनेम बेहद का। विष्णु भी है सरनेम बेहद का। इसलिए उन्हों की माला है। ब्राह्मणों की माला होती नहीं।

ऐसे कोई बात है नहीं जो तुम न समझ सको। और पूछने पड़े। बाप को याद करना है जिससे ही विकर्म विनाश होंगे। स्वदर्शनचक्रधारी भी हो। 84 की नालेज है बाकी क्या पूछते हो। बाप सभी रेजकारी समझाते ही रहते हैं। अच्छा। मीठे2 सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है?